विचार बिन्दु

मनुष्य जीवन अनुभव का शास्त्र है। –विनोबा

आयुर्वेद के लम्बे इतिहास की छोटी कहानी

भारत में आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा के एक अगुआ विद्वान डॉ. वी.बी. मिश्रा जी ने प्रयागराज में संगम का आनंद लेने का आमंत्रण दिया तो मैं उस मोह का संवरण नहीं कर पाया। वहां जाकर प्रकृति के अद्भुत स्वरूप का आनंद लेने, साथ ही आचार्य मिश्र के साथ आयुर्वेद के लम्बे इतिहास पर चर्चा बहुत आनंददायी रही। आज का यह अतिथि सम्पादकीय डॉ. वी.बी. मिश्रा की नवाचारी कर्मठता को समर्पित है और उनके आग्रह पर आयुर्वेद के लम्बे इतिहास की छोटी कहानी यहाँ प्रस्तुत है।

आयुर्वेद को मूल रूप से अथर्ववेद का उपवेद माना जाता है। इसका मूल कारण यह है कि अथर्ववेद में न केवल बहुत स्पष्ट रूप से चिकित्सा का वर्णन है, अपितु ऋग्वेद की तुलना में औषधियों की संख्या भी अधिक अंकित है। यह बात सत्य है कि ऋग्वेद का औषधि सूक्त आयुर्वेद का सबसे पुराना दस्तावेज है, किन्तु अथर्ववेद में भारतीय चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक रूप से अधिक प्रायोगिक विस्तार मिलता है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति भारत की मूल्यवान और अनोखी धरोहर है। आयुर्वेद का उद्भव काल 6000 ई. पू. माना जाता है, पर मतभिन्नता के बावजूद इसे 5000 साल पुरानी चिकित्सा पद्धति तो माना ही जाता है। आयुर्वेद का सबसे पुराना उपलब्ध ग्रन्थ ई. पू. पांचवी शताब्दी में आचार्य चरक द्वारा लिखित चरक संहिता है। उसके पश्चात् सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय, सारंगधर संहिता, माधव निदान, भावप्रकाश आदि ग्रन्थ लिखे गये। इनमें से चरक संहिता से प्रारंभ कर 15वीं शताब्दी में लिखित भावप्रकाश तक का समयकाल लगभग 2000 वर्ष का है। इस यात्रा में आचार्य नागार्जुन की रस औषधियों सहित तमाम रोचक नवाचार हुये, जो आज भी आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से लोगों के चेहरे पर मुस्कराहट ला रहे हैं।

संक्षेप में देखा जाये तो अथर्ववेद काल में चिकित्सा मुख्य रूप से देवताओं के ऊपर आश्रित मानी जाती थी, यही कारण है कि इस प्रकार की चिकित्सा को बाद में आयुर्वेद संहिता काल में दैव-व्यापाश्रय चिकित्सा के रूप में जाना गया है। अथर्ववेद काल की चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि एक रोग के लिए एक औषधि का प्रयोग ही दृष्टिगत होता है, किन्तु साथ ही उपचार में देवताओं, मंत्रों, पूजा-पाठ आदि अनिवार्य रूप से प्रयुक्त हुये।

अथर्ववेद परम्परा का कौशिक सूत्र इस परम्परा का अगला पड़ाव माना जाता है। कौशिक सूत्र मूलत: अथर्ववेद परम्परा का सूत्र है। अत: स्वाभाविक रूप से अथर्ववेद की चिकित्सा तथा औषधीय पौधों के संदर्भ और प्रक्रिया यथावत पायी जाती है। तथापि अथर्ववेद और कौशिक सूत्र दोनों में उपलब्ध चिकित्सा विवरण में कुछ मूलभूत अन्तर है।

जहां एक ओर अथर्ववेद में एक रोग के लिये एकल औषधि और साथ में पूजा-पाठ का विधान प्रयुक्त किया गया है, वहीं कौशिक सूत्र में पूजा-पाठ का विधान तो है परन्तु एकल औषधियों की जगह रोगों के लिये अनेक औषधियों के मिश्रण या योग का प्रयोग हुआ। दूसरा अंतर यह आया कि कौशिक सूत्र में ऐसी अनेक औषधियां वर्णित हैं, जिनका संदर्भ अथर्ववेद में नहीं मिलता है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह हुआ कि आयुर्वेद के विकास की यात्रा में अथर्ववेद एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, किन्तु बाद में रचित कौशिक सूत्र में नई औषधियों और रोगों के लिये नवाचारी योग जुड़ गये। हालांकि कौशिक सूत्र में भी स्पष्टतया पूजा-पाठ को चिकित्सा में उपयोग लेने की अथर्व परम्परा को तो यथावत दिया गया, परन्तु केवल पूजा-पाठ और एक औषधि की बजाय बहुत औषधियां योग देने का तात्पर्य यह लगाया जाता है कि पूजा-पाठ के साथ-साथ औषधियों को भी बराबर का महत्त्व दिया गया है। अथर्व परम्परा का कौशिक सूत्र निश्चित रूप से आयुर्वेद के विकास में एक मील का पत्थर है परन्तु यह भी सही है कि चिकित्सा के मूल दर्शन के रूप में पूजा-पाठ आदि को कौशिक सूत्र में भी बराबर महत्व दिया गया है।

आगे चलकर संहिताकाल, जो लगभग 1000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर पहली शताब्दी तक माना जा सकता है, को आयुर्वेद का स्वर्णकाल कहा जाता है। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि संहिताकाल में उस समय तक चिकित्सा का जो भी ज्ञान वेदों, उपनिषदों, ब्राम्हणों या सूत्रों में उपलब्ध था, उस सम्पूर्ण ज्ञान को एकत्र कर संहिताकाल में आचार्यों ने जांच-परख कर और प्रत्यक्ष प्रायोगिक परीक्षण कर संहिताबद्ध किया। यही कारण है कि आयुर्वेद की मूल संहिताओं में चिकित्सा यर्थाततः युक्ति-व्यापाश्रय (प्रमाण-आधारित या रेशनेल मेडिसन) में बदल गई। इस प्रकार अंतत: आयुर्वेद पूर्णत: वैज्ञानिक धरातल पर आ गया।

संहिताकाल का आयुर्वेद वांग्मय मूल रूप से चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिता में उपलब्ध है। चरकसंहिता मूलत: कायचिकित्सा से संबंधित ग्रन्थ है, जबकि सुश्रुत संहिता मूलत: शल्यचिकित्सा से संबंधित है। दोनों में इस असमानता के बावजूद दोनों संहितायें प्रमाण-आधारित वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ही प्रतिपादित करती हैं। इन संहिताओं में प्रमाण, कारण-कार्य प्रभाव, तर्क-संगतता आदि को उतना ही महत्व दिया गया है जितना कि आज के वैज्ञानिक शोध में दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि पूरा विश्व आचार्य सुश्रुत को शल्य-चिकित्सा का जन्मदाता मानता है।

आयुर्वेद का और बेहतर उपयोग मानवता के कल्याणार्थ किया जा सकता है, परन्तु यह तभी संभव है जब वर्ष 1600 से 1947 के मध्य आयुर्वेद को दुर्बल करने के जितने भारी प्रयास हुये, उससे दुगने प्रयास अब इसे आगे बढ़ाने के लिये किये जायें।

आचार्य सुश्रुत ने शल्य क्रिया के इतने विस्तृत सूत्र और विधियाँ लिखा कि उसमें कोई ऐसा कदम नहीं छूटा जिसे आज आधुनिक विज्ञान ने बिलकुल नये सिरे से खोजा हो। यहाँ तक कि शल्य क्रिया में प्रथक से काम आने वाले जो औजार जगह आचार्य सुश्रुत ने डिजाइन किये उसमें कोई बहुत बड़ा परिवर्तन आज भी नहीं आया है। लगभग समान औजार आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं। आप यह कह सकते हैं कि इन औजारों के निर्माण के लिये आज बेहतर तकनीक तो उपलब्ध है किन्तु उनके मूलभूत डिजाइन में कोई विषेष अन्तर नहीं आया है।

इस संक्षिप्त चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक काल से लेकर संहिता काल तक और संहिता काल से आज तक आयुर्वेद के विकास की एक बड़ी रोचक यात्रा रही है।

आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से परखने पर चरक संहिता शरीर-विज्ञान, भ्रूणविज्ञान, फिजियोलॉजी, फार्माकोलॉजी, खाद्य एवं पोषण, पाचनतंत्र एवं पाचन-क्रियाविज्ञान, रक्त-परिसंचरण तंत्र, मानस-विज्ञान, रोग निदान-विज्ञान, प्रिवेंटिव कार्डियोलॉजी, मेडिको-बॉटनी, एवं काय-चिकित्सा जैसे अनेक विषयों का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आज विश्वभर के वैज्ञानिक अपने शोध-पत्रों के प्रकाशन में पूर्ववर्ती शोध का संदर्भ देते हैं, ठीक उसी प्रकार प्राचीन आयुर्वेदाचार्यों ने, समय और ज्ञान की लंबी यात्रा में उत्तरोत्तर, अपने पूर्ववर्ती विद्वानों की शोध का विवरण देते हुये आयुर्वेद को उत्तरोत्तर स्वयं के अनुभवों से परिष्कृत किया। चरक संहिता में वर्णित औषधीय पौधों की प्रजातियों की संख्या और उपयोगिता का वर्णन बाद के ग्रन्थों में निरंतर बढ़ता गया है। चरक संहिता में कुल 627 औषधीय पादपों को पहचाना जा सका है। सुश्रुत संहिता और अष्टांगहृदय सहित मुख्य ग्रंथों को मिलायें तो 1250 औषधीय पौधों का आयुर्वेद में अधिक उपयोग हो रहा है।

आचार्यों ने अपने पूववर्ती विद्वानों द्वारा बताई गई औषधियों पर प्रमाण-आधारित भरोसा किया। साथ ही, स्वस्थ व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगियों की रुग्णता शान्त करने के लिये समय के साथ नई-नई औषधियों की खोज या पूर्व से ज्ञात औषधियों के नवीन गुणों को पहचाना, परिभाषित किया और अपने ग्रन्थों में उल्लेख किया।

समय के साथ बढ़ती विशेषज्ञता भी बड़ी रोचक है। चरक संहिता में यद्यिप आयुर्वेद चिकित्सा के सभी अंगों को समाहित किया गया परंतु मूल ध्यान काय-चिकित्सा और रसायन चिकित्सा की ओर ही रहा। आचार्य सुश्रुत ने आयुर्वेद के विभिन्न पहलुओं का विवरण दिया परंतु सुश्रुत संहिता में विशेषज्ञता शल्य क्रिया में केन्द्रित रही। काश्यप संहिता बाल एवं महिला स्वास्थ्य पर केन्द्रित है। आचार्य चक्रदत्त ने एकल औषधि चिकित्सा पद्धति में विशेषज्ञता विकसित कर लिखा। इसी प्रकार पॉली-हर्बल या बहु-पादपीय औषधियों द्वारा चिकित्सा में आचार्य सारंगधर का कोई सानी नहीं है।

आयुर्वेद में आधुनिक वैज्ञानिक शोध हालाँकि अभी अपने बचपन में है, फिर भी स्कोपस डेटाबेस से ज्ञात होता है कि वर्ष 1923 से 2019 के दौरान प्रकाशित कुल 30,671 शोधपत्रों जिनमें कहीं न कहीं आयुर्वेद का उल्लेख हुआ है, उनमें से 9,973 शोधपत्र विशेषकर आयुर्वेद पर केन्द्रित हैं। पिछले एक दशक के दौरान भारत के कई दिग्गज वैज्ञानिकों और आयुर्वेदाचार्यों की शोध ने आयुर्वेद का प्रमाण-आधार बहुत मजबूत किया है। आयुर्वेदिक बायोलॉजी, आयुर्वेदिक जीनोमिक्स, समग्र-पद्धति या होल-सिस्टम क्लिनिकल ट्रायल्स आदि में उपयोगी कार्य हो रहा है। आधुनिक विज्ञान के समावेश से आयुर्वेद का और बेहतर उपयोग मानवता के कल्याणार्थ किया जा सकता है परन्तु यह तभी संभव है जब वर्ष 1600 से 1947 के मध्य आयुर्वेद को दुर्बल करने के जितने भारी प्रयास हुये, उससे दुगने प्रयास अब इसे आगे बढ़ाने के लिये किये जायें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

पीपल पूर्णिमा पर एक लाख श्रद्धालुओं ने पुष्कर सरोवर में लगाई डुबकी

पुष्कर,(निसं)। पीपल पूर्णिमा के अवसर पर लगभग एक लाख लोगों ने पवित्र पुष्कर सरोवर में डुबकी लगाकर पुण्य कमाया और जगत पिता ब्रह्मा सहित सभी मंदिरों में श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। इस दौरान पुष्कर में भारी अव्यवस्था रही।

ना तो पुलिस प्रशासन की ओर से स्पेशल जाप्ता नजर आया और न ही पुष्कर नगरपालिका की ओर से कोई इंतजाम दिखाई दिए। आने वाले यात्रियों को सुविधा प्रदान करने के लिए पुष्कर के एसडीएम ने 2 दिन पहले ही पुष्कर नगरपालिका सहित अन्य अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए थे लेकिन ये निर्देश हवा हो गए। पुष्कर नगरपालिका कचरा को लेकर जुर्माने की तैयारी कर रही है। वहीं पूरे पुष्कर में हरा चारा बेचने वाली औरतों ने जगह-जगह चारे के ढ`ेर लगाकर गंदगी फैलाई। आवारा जानवर चारे के लिए लड़ते नजर आए।

- भारी अव्यवस्थाओं के बीच पीपल पूर्णिमा का स्नान सम्पन्न
- पुष्कर में कार्तिक पूर्णिमा के जैसा माहौल नजर आया

पवित्र पुष्कर सरोवर में स्नान ,पूजा के लिए उमडा भक्तों का सैलाब।

पुष्कर के मुख्य मार्गों में चार पहिया दुपहिया वाहनों के प्रवेश के कारण श्रद्धालु यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ी कई बार तो मुख्य मार्ग जाम हो गए। इस दौरान समाजों की ओर से सामूहिक विवाह सम्मेलन भी रखा गया जिसमें खटीक एवं वैष्णव समाज की ओर से सामूहिक रूप से अलग-अलग बिंदौरी आज भी निकाली गई। आज पुष्कर में कार्तिक पूर्णिमा की तरह भारी भीड़ रही। पूजा व स्नान करने के लिए एक दिन पहले से ही श्रद्धालुओं का आना प्रारंभ हो गया जिसकी वजह से पुष्कर की होटल धर्मशाला फुल हो गई। पीपल पूर्णिमा के स्नान के साथ ही 5 दिन तक चलने वाला बैसाख माह का बड़ा स्नान भी सम्पन्न हो गया। पीने के पानी के लिए जलदाय विभाग की ओर से इंतजाम नहीं थे लोग अपने स्तर पर ठंडे पानी के कैम्पर मंगाकर जगह-जगह यात्रियों की सुविधा के लिए पानी की व्यवस्था की।

धक्का-मुक्की में महिला घायल : पुष्कर में अपने साथियों के साथ पीपल पूर्णिमा के पावन अवसर पर सरोवर में स्नान करने आई छींपा बडौद कोटा निवासी सुषमा देवी उम्र 65 वर्ष बाजार में भारी भीड़ के अंदर धक्का-मुक्की के दौरान गिरने से गंभीर रूप से घायल हो गई। उसे पुष्कर अस्पताल में इलाज के बाद अजमेर रैफर कर दिया गया। सुषमा के पैर में फ्रैक्चर हो गया तथा सिर में भी थोड़ी चोट लगी है।

जयसमंद अभयारण्य के लिए आठ और सांभर लाए

उदयपुर के जयसमंद अभयारण्य के लिए आठ और सांभर दिल्ली चिड़ियाघर से लाए गए।

उदयपुर, (कासं)। केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण नई दिल्ली के निर्देशों के तहत दिल्ली स्थित चिडियाघर से शनिवार को आठ और सांभर वन्यजीव अभयारण्य जयसमंद के लिए लाए गए। इन सभी को क्वेरनटाइन क्लोजर में छोड़ा गया, जहां से 21 दिन की समय समाप्ति पर इन्हें अभयारण्य में छोड़ दिया जाएगा।

- केंद्रीय चिड़ियाघर नई दिल्ली से लाए गए 8 सांभर

इनमें तीन नर व पांच मादा सांभर हैं। उप वन संरक्षक, वन्यजीव हरिणी वी. ने बताया कि पहले भी 10 सांभर लाकर क्वेरनटाइन क्लोजर में छोड़े गए थे। इन सभी को लाने के लिए पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ करमेंद्र प्रताप के नेतृत्व में सहायक वनपाल लाल सिंह, वाहन चालक शैलेंद्र सिंह, गिरधारी सिंह, वनरक्षक द्वारका प्रसाद, वनपाल सतनाम सिंह और वन संरक्षक महेश खैर की टीम ने सहारनीय कार्य किया। हरिणी वी. ने बताया कि लाए गए सभी सांभर पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। क्वेरनटाइन एंक्लोजर में इनके लिए चारा, दाना, पानी की व्यवस्था की गई है। अभयारण्य में लाए गए इन वन्यजीवों से अभयारण्य का इकोसिस्टम सुदृढ़ होगा और वन क्षेत्र भी सुरक्षित रहेगा। क्वेरनटाइन में क्षेत्रीय वन अधिकारी गौतमलाल मीणा व उनके स्टाफ की ओर से सांभर के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही हैं।

रेल फाटक पर बैरियर नीचे नहीं होने से मचा हड़कम्प

श्रीकरणपुर, (कासं)। कस्बे के मुख्य रेल फाटक पर शनिवार को उस समय हड़कम्प मच गया, जब सूरतगढ़ से श्रीगंगानगर जाने वाली ट्रेन बैरियर से महज ढाई सौ मीटर दूर रह गई लेकिन बैरियर नीचे ही नहीं हुआ। हालांकि इस दौरान सिग्नल नहीं होने से चालक ने रेल को आगे नहीं बढ़ाया और कोई हादसा नहीं हुआ। मुख्य रेल फाटक पर आधुनिक तकनीक का बैरियर लगा हुआ है, जिसे बैरियर के पास से ही नियंत्रित किया जाता है। शनिवार दोपहर तकरीबन ढाई बजे इस रेल फाटक से होकर सूरतगढ़ -श्रीगंगानगर ट्रेन गुजरनी थी। ट्रेन श्रीकरणपुर रेल वे स्टेशन पर पहुंचने के कुछ समय बाद वहां से रवाना हुई। इस दौरान स्टेशन से कुछ दूरी पर मुख्य रेल फाटक पर बने इस बैरियर को नीचे किया जाना था। प्वाइंट मैन भरत कुमार ने जब इस बैरियर को नीचे करने का प्रयास किया तो यह नीचे नहीं हुआ।

- बैरियर को ऊपर देख लोगों की सांस अटकी

ऐसे में प्वाइंट मैन के हाथ-पांव फूल गए और परिस्थिति को भांपते हुए वह तकनीकी खराबी की जानकारी लेने के लिए रेल वे स्टेशन की ओर भागा। इसी दौरान स्टेशन से श्रीगंगानगर-सूरतगढ़ ट्रेन बैरियर की तरफ रवाना हो गई। सामने ट्रेन व बैरियर को ऊपर देख बैरियर के पास खड़े लोगों की सांस अटक गई। किसी अनहोनी की आशंका में उन्होंने तत्परता दिखाते हुए बैरियर के पास रखी लोहे की जंजीर लगाकर वहां यातायात रोक दिया। गनीमत यह रही कि बैरियर से करीब ढाई सौ मीटर दूर रहते सिग्नल नहीं होने से रेल को चालक ने रोक दिया।

असल में रेलवे के आधुनिक तकनीक के बैरियरों में दुर्घटना रोकने के प्रावधान किए गए हैं। इसी क्रम में बेरियर को सिग्नल से जोड़ा गया है। ऐसे में जब तक बैरियर नीचे नहीं होता रेल का सिग्नल भी नहीं हो पाता। ऐसे में हरा सिग्नल नहीं होने से रेल को बेरियर से करीब ढाई सौ मीटर दूर रोक दिया गया। मनोज मीणा, स्टेशन मास्टर, श्रीकरणपुर ने बताया कि कस्बे में शनिवार को करीब ढाई बजे रेल वे बेरियर में तकनीकी खामी से परेशानी आई थी।

बैरियर व सिग्नल आपस में जुड़े रहते हैं और ऐसे में बैरियर नीचे होने से पहले ट्रेन आ ही नहीं सकती। ट्रेन बैरियर से करीब ढाई सौ मीटर दूर ही रुक गई और लगभग चार मिनट वहीं रुकी रही। घटना से लोगों में हडकंप तो मचा लेकिन किसी तरह का कोई नुकसान नहीं हुआ।

पचास फीट गहरे कुंए में गिरी नील गाय को क्रेन की सहायता से बाहर निकाला

सिरोही में रेवदर उपखण्ड क्षेत्र के मंडार गांव स्थित सुखे कुंए में गिरी नीलगाय को क्रेन की सहायता से बाहर निकाला गया।

मंडार, (निसं)। सिरोही जिले के रेवदर उपखंड क्षेत्र के ग्राम मंडार कस्बे समीप अमरा राम घांची के खेत पर सूखे पड़े कुंए में नीलगाय गिर गई।

जिसकी सूचना समन्धित विभाव को दी। इसकी जानकारी मिलने पर सु वार रात्रि को वनविभाग की ओर से राम निवास वनरक्षक,अजय कुमार वन रक्षक मौके पर पहुंचे। शनिवार सुबह गजेंद्र सिंह रेंजर अनादरा,पुष्पेंद्र राणावत रेंजर सिरोही, एएसआई भागिरथ सिंह पुलिस थाना मंडार,कॉन्स्टेबल दिलीप सिंह,पवन कुमार मौके पर पहुंचे।

समाज सेवी तगत सिंह परिहार , असगर बलोच लोहे की डोली के सहारे अंदर कुंए में उतरे नीलगाय के कमर में पट्टे बांध कर धीरे -धीरे क्रेन की सायता से नीलगाय को बाहर निकाला गया। वही प्राथमिक उपचार के बाद छोड़ दिया गया।

नागौर में दुर्लभ बीमारी कोलोडियन बेबी ने लिया जन्म

नागौर, (निसं)। नागौर जिले में जिला हॉस्पिटल राजकीय जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय के मदर एण्ड चाइल्ड विंग में विश्व की दुर्लभतम बीमारियों में कोलोडियन बेबी का जन्म हुआ है। बच्चे की हाथ और पैरों की उंगलियां परस्पर जुड़े होने के साथ ही पूरे शरीर पर प्लास्टिक सरीखी स्किन की पर्त चढ़ी हुई है। चिकित्सा विशेषज्ञों का कहना है कि यह बीमारी छह लाख बच्चों में से एक को होती है। इसमें टरमीटोसिस होता है। इसमें सांस लेने में तकलीफ होती है। इसमें धीरे-धीरे इस तरह की समस्याएं और बढ़ती हैं। बच्चा फिलहाल चिकित्सकों की निगरानी में है। इधर बच्चे की इस हालत से परिवार सदमे में है।

- बच्चे के शरीर पर प्लास्टिक स्किन की पर्त चढ़ी हुई है
- छह लाख बच्चों के बीच एक ऐसा बच्चा लेता है जन्म

जिले के निकटवर्ती गुढ़ा भगवानदास गांव के रहने वाले सहदेव का यह पांचवां बच्चा है। इसके पूर्व तीन बच्चे हुए थे, लेकिन उनकी मृत्यु हो चुकी है। चौथा जरूर जीवित है, अब यह पांचवां बच्चा पैदा हुआ तो यह दुर्लभतम जटिल बीमारी से ग्रसित पाया गया। प्लास्टिक सरीखी पर्त में हुए बच्चे को देखकर चिकित्सक भी हैरान रह गए। सहदेव ने बताया कि पत्नी को गॉयनिक समस्या होने पर प्रसव के लिए भर्ती कराया गया। उस समय किसी ने नहीं सोचा था कि प्लास्टिक बेबी पैदा होगा। इसके पैदा होते ही डॉक्टर्स और नर्स दोनों ही हतप्रभ हर गए। इसके बाद सहदेव ने भी देखा तो वह उसे डाल्फिन मछली की तरह चमकता हुआ लग रहा था। बच्चे की स्थिति को गंभीर देखते हुए रैफर कर दिया गया। बच्चे का वजन 2.3 किलोग्राम है।

डॉ. मूलाराम कड़ेला ने बताया कि जेनेटिक डिसऑर्डर के कारण होती है। दुनिया भर में छह लाख बच्चे के जन्म पर एक ऐसा बच्चा पैदा होता है। जिंदगी और मौत से जद्दोजहद कर रहा बच्चे की हालत से परिवार सदमे में है। इसके पूर्व अलवर में भी एक ऐसा ही बच्चा पैदा हुआ था। यह कोलोडियन बीमारी वर्ष 2014 व 2017 में अमृतसर में दो कोलोडियन बच्चों का जन्म हुआ था। दुर्भाग्यवश दोनों की चंद दिनों बाद ही मौत हो गई थी।

चिकित्सा जगत में हुई शोध के अनुसार कोलोडियन बेबी का जन्म जेनेटिक डिस्ऑर्डर की वजह से होता है। ऐसे बच्चों की त्वचा में संक्रमण होता है। कोलोडियन बेबी का जन्म क्रोमोसोम (शुक्राणुओं) में गड़बड़ी की वजह से होता है। सामान्यत महिला व पुरुष में 23-23 क्रोमोसोम पाए जाते हैं। यदि दोनों के क्रोमोसोम संक्रमित हों तो पैदा होने वाला बच्चा कोलोडियन हो सकता है। इस रोग में बच्चे के पूरे शरीर पर प्लास्टिक की परत चढ़ जाती है। धीरे-धीरे यह परत फटने लगती है और असहनीय दर्द होता है। यदि संक्रमण बढ़ तो उसका जीवन बचा पाना मुश्किल होगा। कई मामलों में ऐसे बच्चे दस दिन के भीतर प्लास्टिक रूपी आवरण छोड़ देते हैं। इससे ग्रसित 10 प्रतिशत बच्चे पूरी तरह से ठीक हो पाते हैं। उनकी चमड़ी सख्त हो जाती है और इसी तरह जीवन जीना पड़ता है।

राशिफल

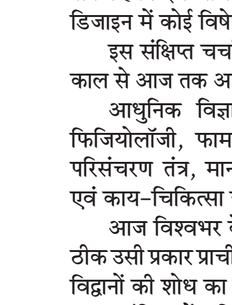

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 19 मई, 2019

ज्येष्ठा मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2076, अनुराधा नक्षत्र, परिद्य योग, बालव करण, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-वृष, गुरू-वृश्चिक, शुक्र-मेष, शनि-धनु, राहु-मिथुन, केतु-धनु राशि में।

आज अनुराधा नक्षत्र रात्रि 2:07 तक, परिद्य योग दिन 1:06 तक है। इसके पश्चात ज्येष्ठा नक्षत्र, शिव योग, कौलव करण आरम्भ होगा। आज राजयोग रात्रि 1:43 से रात 2:07 तक है। आज श्रीनारद जयन्ती है। गंडमूल रात्रि 2:07 से आरम्भ होंगे। विवाह मुहूर्त अनुराधा में है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:22 से 9:02 तक, लाभ-अमृत 9:02 से 12:21 तक, शुभ 2:04 से 3:44 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

मिथुन
आर्थिक विवादों से राहत मिल सकती है। घर-गृहस्थी की परेशानियां दूर होने लगेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यक्तिगत/पारिवारिक खर्चों में वृद्धि हो सकती है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

सिंह
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से परिवार में भागदौड़ रहेगी। अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में सुसंदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों में सार्थक सफलता मिल सकती है।

तुला
वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। वाणी की कटुता के कारण परिवार में तनाव बढ़ सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

वृश्चिक
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव दूर होगा। व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग बना रहेगा।

धनु
व्यक्तिगत/पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। बाहर जाना पड़ सकता है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

मकर
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कुंभ
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में सार्थक सफलता मिलेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यवसायिक संबंध बनेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

मीन
परिवार में सुसंदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।